RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 34 - 39
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

# पिथौरागढ़ जनपद में ताम्र शिल्प का संक्षिप्त अध्ययन

**गीता टम्टा,**
एम.ए., पी–एच.डी. (इतिहास)

*Received* : 16/03/2017 *1st BPR* : 17/03/2017 *2nd BPR* : 20/03/2017 *Accepted* : 22/03/2017

**ABSTRACT**

पिथौरागढ़ में अनेक स्थानों पर ताम्र पत्रों में धार्मिक एवं भूमि दान पत्रों की उपलब्धता से यथा सम्भव पर्याप्त मात्रा में ताम्र शिल्प का कार्य किया जाता रहा है। इन ताम्र पत्रों की उपलब्धता से ज्ञात होता है कि यहाँ पर चन्दशासकों के समय से ही ताम्र शिल्प कार्य शिल्पी टम्टा लोगों द्वारा परम्परागत रूप से किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत 3000 के लगभग ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों के परिवारों की जानकारी प्राप्त हुई। लेकिन इनमें से 45 परिवार जो वर्तमान समय में इस क्षेत्र में ताम्र शिल्पी अपने पुश्तैनी परम्परागत ताम्र शिल्प कार्य को सुचारू ढंग से कर रहे हैं। जिनका साक्षात्कार के माध्यम से ऐतिहासिक तथ्य संकलनों का अध्ययन किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा ज्ञात होता है कि 100.00 प्रतिशत ताम्र व्यावसायी अपने साथ होने वाले भेद भाव को नकारते हैं। कहा जा सकता है कि ताम्र व्यावसायी की सामाजिक परिस्थिति अच्छी है।

***कूट–शब्द*** : ताम्र शिल्पी, सामाजिक जीवन, व्यवसायिक स्थिति, जीविका।

पिथौरागढ़ नगर समुद्रतल से 1650 मी. की ऊँचाई पर 6.47 वर्ग कि.मी. की परिधि में बसा है। यह नगर उत्तर में चंडाक की पहाड़ी दक्षिण में एंचोली, पूर्व में विण और पश्चिम में पौण के मध्य बसा हुआ है। यह छः प्राकृतिक नालों से सिंचित ''सोर घाटी का सुन्दर कटोरीनुमा आकार का क्षेत्र चन्द राजाओं के समय से ही महत्वपूर्ण रहा है। पिथौरागढ़ के इतिहास का मध्ययुग मुख्यतया चन्दवंशी राजाओं का काल माना जाता है। यह काल 1025 ई. के आस–पास से लेकर 1790 ई. तक माना जा सकता है। ''चंद, प्रयाग में गंगा के आस पास झूसी स्थित प्रतिष्ठानपुर के निवासी एवं चंदवंशी राजा हरबोग के वंशज थे। कन्नौज नरेश के राजपाल की हत्या और झूसी में राज्यपाल के पुत्र त्रिलोचनपाल द्वारा अधिकार दिये जाने के फलस्वरूप चंदवंशी राजकुमार एवं ताम्र शिल्पी टम्टा लोग पलायन कर गये।''[1]

इसी पलायन में झूसी का चन्द वंशी सोमचन्द सुई के कत्यूरी राजा ब्रह्मदेव के दरबार में शरणार्थी बनकर रहने लगे। कुछ समय बाद ब्रह्मदेव ने अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दहेज में 15 बीघा जमीन देकर उसे चम्पावत में स्थापित किया। चंद राजाओं के साथ–साथ टम्टा लोग भी जहाँ–जहाँ चंद राजा गये वहाँ स्थापित होते गये। उन्हीं स्थानों में ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों ने ताम्र उद्योग कार्यशालाएं चलायी। चंद राजाओं के ताम्रपत्रों में जब–जब चार थान (कार्की, बौरा, चौधरी एवं तड़ागी) का प्रयोग हुआ। उसी के साथ 15 विशी का भी प्रयोग हुआ है। इसी से चन्दशासकों के भूमि दान पत्र, धार्मिक दान पत्र, ताम्र पत्र से ज्ञात में आये।

ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों द्वारा हथौड़ों, घनों, इत्यादि निर्मित उपकरणों से तैयार कर छेनी एवं कील के नुकीले कोने से ताम्र पत्रों में राजा, महाराजा एवं प्रतिभाशाली शासकों का जो नामोल्लेख उत्कीर्ण किया गया। पिथौरागढ़ में अनेक स्थानों पर ताम्र पत्रों में धार्मिक एवं भूमि दान पत्रों की उपलब्धता से यथा सम्भव पर्याप्त मात्रा में ताम्र शिल्प का कार्य किया जाता रहा होगा। इन ताम्र पत्रों की उपलब्धता से ज्ञात होता है कि यहाँ पर चन्दशासकों के समय से ही ताम्र शिल्प कार्य शिल्पी टम्टा लोगों द्वारा परम्परागत रूप से किया जाता होगा। टम्टा लोगों द्वारा उत्कीर्ण ताम्र पत्र ताम्र शासनों के अभिलेखों से यह विदित होता है कि चंदवंशीय शासकों के साथ टम्टा लोगों का गहरा सम्बन्ध था। राजा अभिलेखों में उत्कीर्ण ताम्र शासनों के लिखित अभिलिखित प्रमाणों से पता चलता है कि, चंद राजाओं ने ताँबे का पत्र उत्कीर्ण करने वालों को ताम्ता (टम्टा) का पद दिया है। उस समय ताम्र शिल्पकारों का वर्ग विशेषाधिकार सम्पन्न वर्ग था।

''मौर्यों की भाँति गुप्त–चोल, चालुक्य तथा राष्ट्रकूट राजाओं के समय उनकी सुरक्षा के लिए विशेष नियम बनाये गये थे। गुप्त काल में शिल्पी–श्रेणी के प्रमुख को 'प्रथम कुलिक कहते थे। वह विषय प्रति (जिलाधिकारी का परिषद का प्रमुख सदस्य) होता

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 34-39 , ISSN 2348 – 3318
*गीता टम्टा*
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

था।''[2] जहाँ तक ताम्र शिल्पकारों की वर्तमान में ताम्र उद्योगों की स्थिति का प्रश्न है। यह स्थिति पूर्व में ताम्र व्यवसाय में जो कमी आयी थी। यह अंग्रेजों की आर्थिक नीति का परिणाम थी। जो भारतीय हस्तशिल्प कला को समाप्त कर अंग्रेजी व्यापार को बढ़ावा देने से सम्बंधित थी।

''पिथौरागढ़ से 7 किमी. दूर असुरचूल नामक पहाड़ी पर आगर–बनागर नामक प्राचीन गाँव है। इन गाँवों के ऊपर पहाड़ी की ढलान पर घना जंगल है। जिसमें अनेक स्थलों पर छोटे–छोटे गड्ढे दिखाई देते हैं। जो सम्भवतः खनकों द्वारा ताम्र खनिज धातु निकालने हेतु खोदे गये थे। गाँव के ऊपर पहाड़ी ढलान में सीढ़ीनुमा खेत हैं, जिनमें लौहमल के साथ ताम्र भी उपलब्ध था। एक बड़े खेत में एक विशाल कठोर पत्थर पर एक गहरा ओखल व्यास 23 सेमी. गहराई 13 सेमी. प्राप्त हुआ है। जो सम्भवतः खनिज को कूटने में प्रयोग किया गया होगा। इससे ताम्र शिल्प उद्योग के रूप में ताम्र धातु को शुद्ध करने की प्राचीनता प्रदर्शित होती है।''[3] तत्पश्चात् इसके बाद ''पिथौरागढ़ से केवल 7 किमी. दूर समुद्रतल से 1800 मीटर की ऊँचाई पर चण्डाक नामक रमणीय स्थल ताम्र खानों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ से आगरी खनकों द्वारा ताम्र धातु निकाला जाता था फिर ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों द्वारा धातु निष्कर्षण कर ताम्र वस्तुओं को निर्मित किया जाता था। वर्तमान में यहाँ मैग्नोसाइट के उद्योग लग जाने से इस स्थान का महत्व और भी बढ़ गया है। औद्योगिक नगर के रूप में अब इस स्थान की प्रगति हो रही है।''[4] चंडाक से नीचे 15 किमी. दूर बाँस जजराली स्थित है। जजराली के नजदीक बजेटी है। मुख्य पिथौरागढ़ से सटा पियाना, टकाना, पुरान, पुनेड़ी में पहले से ही काफी दक्ष ताम्र शिल्पी टम्टा लोग निवास करते हैं। पिथौरागढ़ से बेरीनाग 102 किमी. की दूरी पर 1720 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक रमणीय स्थान है। यहाँ से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों के भव्य दर्शन होते हैं। यहाँ के अनेक स्थान ताम्र खानों एवं ताम्र शिल्प कार्यो के लिए प्रसिद्ध है। बेरीनाग से 5 किमी. की दूरी पर ग्वीर गाँव स्थित है। बेरीनाग से 25 किमी. की दूरी पर (खनात) गणतीर स्थित है। बेरीनाग से 25 किमी. की दूरी पर पौसा और 35 किमी0 की दूरी पर बनकोट स्थित है। जिससे ताम्र खानों एवं ताम्र मानवाकृतियों के साथ–साथ ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों के ताम्र धातु उद्योग केन्द्र से निर्मित ताम्र वस्तु उपकरण, ताम्र शासन पत्रों के बारे में पता चलता है।

पिथौरागढ़ से गंगोलीहाट 77 किमी. की दूरी पर है। यहाँ से 10 किमी. की दूरी पर हनेरा 5 किमी. की दूरी पर टिम्टा गाँव है। इन स्थानों में भी अनेक ताम्र शिल्पी टम्टा लोग निवास करते हैं, और अपनी परम्परागत ताम्र शिल्प कार्य को करने में वर्तमान में भी कई शिल्पी पुश्तैनी कार्य को करने में रत हैं। बेरीनाग से राईआगर 7 किमी0 की दूरी में स्थित है। जहाँ पर काफी दक्ष धातु कर्मी निवास करते थे। पिथौरागढ़ से 60 किमी0 की दूरी पर असकोट जो पूर्व से ताम्र खानों ताम्र उद्योग केन्द्रों के लिए जाना जाता है। यहाँ की पाल वंशावली, ताम्र शासनों एवं ताम्र पत्रों, ताम्र लेखों में ताम्र शिल्पियों द्वारा उत्कीर्ण ताम्र पत्रों से ज्ञात होता है। पिथौरागढ़ 'जमतेड़ी' कालिका, धारचूला से पहले जो ताम्र शिल्पी शिल्पकारिता कार्य को करने में पारंगत रहे हैं। इसी के नजदीक मुबानी, गैदाली, मातोली, गणाई, थल, चौखुना, नैनी, लिथलाकोट, चौदास इत्यादि स्थानों में ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों के स्थानों के साथ–साथ ताम्र उद्योग कार्यशालाएं भी थी। पूर्व में इन उद्योग कार्यशालाओं में अनेक प्रकार के बर्तन एवं उपयोगी धार्मिक वाद्य यन्त्र अन्य वस्तु उपकरणों को ताम्र शिल्पियों द्वारा निर्मित किया जाता था।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत 3000 के लगभग ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों के परिवारों की जानकारी प्राप्त हुई। लेकिन इनमें से 45 परिवार जो वर्तमान समय में इस क्षेत्र में ताम्र शिल्पी अपने पुश्तैनी परम्परागत ताम्र शिल्प कार्य को सुचारू ढंग से कर रहे हैं। जिनका साक्षात्कार के माध्यम से ऐतिहासिक तथ्य संकलनों का अध्ययन किया गया है। जो प्रस्तुत अध्ययन में इस प्रकार से है–

सारणी संख्या–1
ताम्र शिल्प व्यवसाय करने के कारण के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | कारण | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | परम्परागत | 10 | 22.00 |
| 2. | आर्थिक | 35 | 78.00 |
| 3. | रूचि | 00 | 00 |
| | **कुल योग** | **45** | **100** |

उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि ताम्र शिल्पी टम्टा लोगों में 22.00 प्रतिशत लोग अपने पुश्तैनी परम्परागत रूप से ताम्र व्यवसाय कर रहे हैं। 78.00 प्रतिशत आर्थिक कारणों से ताम्र व्यवसाय में लगे हैं। जबकि रूचि के कारण ताम्र व्यवसाय करने वालों का प्रतिशत न्यून है। अतः कहा जा सकता है कि वर्तमान में ताम्र व्यवसाय का कार्य केवल आर्थिक अर्जन

के लिए ही किया जा रहा है।

सारणी संख्या–2
ताम्र शिल्प कार्य करने की अवधि के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | अवधि | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | 5 से 10 वर्ष | 05 | 11.00 |
| 2. | 11 से 20 वर्ष | 34 | 76.00 |
| 3. | 21 से 30 वर्ष | 06 | 13.00 |
| 4. | 31 से 40 वर्ष | 00 | 0.00 |
| 5. | 41 से 50 वर्ष | 00 | 0.00 |
| 6. | 50 से ऊपर | 00 | 0.00 |
| | **कुल योग** | **45** | **100.00** |

उपरोक्त ऐतिहासिक तथ्य संकलनों विवेचनों द्वारा ज्ञात होता है कि ताम्र शिल्पियों में 11.00 प्रतिशत 5 से 10 वर्ष से ताम्र शिल्प का कार्य कर रहे हैं। 76.00 प्रतिशत 11 से 20 वर्ष से ताम्र शिल्प का कार्य कर रहे हैं। 21 से 30 वर्ष से ताम्र शिल्प का कार्य करने वाले 13.00 प्रतिशत हैं।

सारणी संख्या –3
ताम्र वस्तुओं के निर्माण के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | निर्माण | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | घरेलू उपयोग | – | – |
| 2. | धार्मिक उपयोग | – | – |
| 3. | सामाजिक उपयोग | – | – |
| 4. | वाद्य उपयोग | – | – |
| 5. | सभी | 45 | 100.00 |
| | **कुल योग** | **45** | **100.00** |

ताम्र वस्तुओं के निर्माण के आधार पर उपयुक्त सारणी द्वारा ज्ञात होता है कि ताम्र शिल्पी टम्टा लोग अपनी ताम्र कारिता के आधार पर घरेलू उपयोग, धार्मिक उपयोग, सामाजिक उपयोग एवं वाद्य यन्त्रों ये सभी प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करते हैं।

सारणी संख्या–4
ताम्र वस्तुओं के निर्माण में आधुनिक तकनीकी के प्रयोग के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | प्रयोग | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 05 | 11.00 |
| 2. | नहीं | 40 | 89.00 |
| | **कुल योग** | **45** | **100.00** |

प्रस्तुत विश्लेषण द्वारा प्राप्त तथ्यों संकलनों से पता चलता है कि 89.00 प्रतिशत ताम्र व्यवसायी ताम्र वस्तुओं के निर्माण में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग नहीं करते जबकि केवल 11.00 प्रतिशत ही ताम्र वस्तुओं के निर्माण में आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हैं। उपरोक्त स्थिति ताम्र व्यवसाय करने वाले की आधुनिक तकनीक से अनभिज्ञ होने एवं परम्परागत तकनीक में पारंगत होने की स्थिति को दर्शाती है।

सारणी संख्या–5
निर्मित वस्तुओं का निर्यात के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | निर्यात | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | अपने राज्य में | 35.00 | 78.00 |
| 2. | दूसरे राज्य में | 05.00 | 11.00 |
| 3. | विदेशों में | 05.00 | 11.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

उपरोक्त आंकड़ों द्वारा प्राप्त ऐतिहासिक तथ्य संकलनों से सामने आता है कि ताम्र व्यावसायिकों में 78.00 प्रतिशत अपने द्वारा निर्मित वस्तुओं का निर्यात अपने राज्य में करते हैं। 11.00 प्रतिशत दूसरे राज्यों में तथा 11.00 प्रतिशत विदेशों को निर्मित वस्तुओं का, निर्यात करते हैं। अतः ज्ञात होता है कि ताम्र व्यवसाय के लिए अपने राज्य में ही उपयुक्त बाजार की सुविधा उपलब्ध है

सारणी संख्या –6
ताम्र धातु को प्राप्त करने के लिए आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | प्राप्त | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | खानों से | 00.00 | 00.00 |
| 2. | स्थानीय दुकानदारों से | 45.00 | 100.00 |
| 3. | बाहरी दुकानदारों से | 00.00 | 00.00 |
| | **कुल योग** | **45** | **100.00** |

उपयुक्त सारणी के आधार पर विश्लेषण किया जाता है कि 100.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी ताम्र धातु को स्थानीय दुकानदारों से ही प्राप्त करते हैं।

सारणी संख्या–7
ताम्र व्यवसाय में महिलाओं के योगदान के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | महिला योगदान | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 45.00 | 100.00 |
| 2. | नहीं | 00.00 | 00.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

ताम्र व्यवसाय में महिलाओं के योगदान के आधार पर प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि 100.00 प्रतिशत महिलाएं ताम्र व्यवसाय में योगदान करती है। अतः कहा जा सकता है कि वर्तमान में महिलाएं अन्य क्षेत्रों के समान ही ताम्र व्यवसाय में भी अपना योगदान कर आत्म निर्भर बन रही है।

सारणी संख्या–8
ताम्र व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन हेतु धन प्राप्ति सम्भव के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | सम्भव | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 30.00 | 67.00 |
| 2. | नहीं | 15.00 | 33.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

उपरोक्त सारणी में विवेचन के आधार पर ज्ञात होता है कि 67.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी मानते हैं कि ताम्र व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन हेतु धन प्राप्ति सम्भव है। जबकि 33.00 प्रतिशत इसके विपक्ष में उत्तर देते हैं। अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि ताम्र व्यवसाय जीविकोपार्जन हेतु धन प्राप्ति के लिए उपर्युक्त है।

सारणी संख्या –9
ताम्र व्यवसाय से प्राप्त आय से परिवार का भरण–पोषण भली–भॉति करने के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | भरण–पोषण | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 35.00 | 78.00 |
| 2. | नहीं | 10.00 | 22.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

उपरोक्त ताम्र परम्परागत के रूप में ऐतिहासिक तथ्यों के विश्लेषण से सामने आया है कि 78.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी ताम्र व्यवसाय से प्राप्त आय से परिवार का भरण–पोषण भली–भाँति कर सकते हैं। केवल 10.00 प्रतिशत ही इनके विपक्ष में अपना मत व्यक्त करते हैं। अतः सारणी संख्या 8 एवं 9 से प्राप्त ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि ताम्र परम्परागत व्यवसाय पारिवारिक आय के लिए एक उपर्युक्त व्यवसाय है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 34-39 , ISSN 2348 – 3318
गीता टम्टा
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

सारणी संख्या–10
व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | सन्तुष्टी | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 30.00 | 67.00 |
| 2. | नहीं | 15.00 | 33.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

इस सारणी में विवेचन से ज्ञात ताम्र व्यवसाय से सन्तुष्टी के आधार पर प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 67.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी ताम्र व्यवसाय से सन्तुष्ट है। मात्र 33.00 प्रतिशत ही ताम्र व्यवसाय को करने में सन्तुष्ट नहीं हैं।

सारणी संख्या–11
वर्तमान परिपेक्ष में व्यवसाय अपनाने के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | व्यवसाय | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | मूलस्थान | 05.00 | 08.00 |
| 2. | वर्तमान स्थिति | 35.00 | 59.00 |
| 3. | अन्य | 20.00 | 33.00 |
| | **कुल योग** | **60.00** | **100.00** |

उपर्युक्त सारणी द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि 59.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी वर्तमान परिपेक्ष में वर्तमान का व्यवसाय अपनाने का पक्ष करते हैं। 08.00 प्रतिशत मूल स्थान का जबकि 33.00 प्रतिशत अन्य व्यवसाय अपनाने का पक्ष करते हैं।

सारणी संख्या–12
ताम्र शिल्प के लिए हो रहे सरकारी प्रयासों से सन्तुष्टी के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | सन्तुष्टी | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 07.00 | 16.00 |
| 2. | नहीं | 38.00 | 84.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

उपर्युक्त आंकड़ों से ऐतिहासिक परम्परागत ताम्र शिल्प में तथ्यों के आधार पर चलता है कि 84.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी ताम्र शिल्प के लिए हो रहे सरकारी प्रयासों से सन्तुष्ट नहीं हैं। केवल 16.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी ताम्र शिल्प के लिए हो रहे सरकारी प्रयासों से सन्तुष्ट हैं। उपरोक्त स्थिति ताम्र शिल्पियों की सरकारी प्रयासों से असन्तुष्टी की ओर संकेत करती है।

सारणी संख्या–13
ताम्र शिल्प के लिए आधुनिक/वैज्ञानिक तकनीकी होने के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | आधुनिक/वैज्ञानिक | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 40.00 | 89.00 |
| 2. | नहीं | 05.00 | 11.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

ऊपर दी गई सारणी से ज्ञात होता है कि 89.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी मानते हैं कि ताम्र शिल्प के लिए आधुनिक/वैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग होना चाहिए जबकि 11.00 प्रतिशत इसके विपक्ष में अपना उत्तर देते हैं। अतः कहा जा सकता है कि ताम्र शिल्पी आधुनिक/वैज्ञानिक तकनीक को अपनाना चाहते हैं। जबकि सारणी संख्या 4 द्वारा प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि अधिकांश 89.00 प्रतिशत ताम्र वस्तुओं के निर्माण में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करते हैं।

सारणी संख्या–14
अपने बच्चों को ताम्र व्यवसाय में संलग्न करने के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | संलग्न | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 03.00 | 07.00 |
| 2. | नहीं | 42.00 | 93.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

उपरोक्त विश्लषणों से स्पष्ट होता है कि 93.00 प्रतिशत ताम्र शिल्पी अपने बच्चों को ताम्र व्यवसाय में संलग्न नहीं करना चाहते। मात्र 07.00 प्रतिशत ही अपने बच्चों को भी ताम्र व्यवसाय में संलग्न करना चाहते हैं। अतः कहा जा सकता है कि ताम्र शिल्पियों की सोच अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक है। ताम्र शिल्पी अपने बच्चों को उत्तम शिक्षा दिलाने के पक्ष में है। तत्पश्चात् स्थितिनुसार ताम्र व्यवसाय में संलग्न करने की बात करते हैं।

सारणी संख्या–15
ताम्र शिल्प व्यवसाय करने वालों के साथ भेदभाव होने के आधार पर वर्गीकरण

| क्रम सं. | भेदभाव | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हॉ | 00.00 | 00.00 |
| 2. | नहीं | 45.00 | 100.00 |
| | **कुल योग** | **45.00** | **100.00** |

उपर्युक्त ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा ज्ञात होता है कि 100.00 प्रतिशत ताम्र व्यावसायी अपने साथ होने वाले भेद भाव को नकारते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि ताम्र व्यावसायी की सामाजिक परिस्थिति अच्छी है।

## सन्दर्भ सूची

1. पाठक शेखर एण्ड गिरिजा (2009) पहाड़, सोलह–सत्रह, पिथौरागड़, अंक परिक्रमा, तल्लाडाँडा, तल्लीताल, नैनीताल, उत्तराखण्ड, पृ0 सं0 61, 62,
2. पांण्डे बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास, अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा, पृ0 सं0 591,
3. राज हंस (2009) देव भूमि, उत्तराखण्ड राजभाषा द, (सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत–प्रोत उत्तराखण्ड का सचित्र वर्णन) दिल्ली.
4. नौटियाल शिवानन्द (2010), पृ. 70.